

3,4,2, 14,4,1, 2, 3,6, 3,32, 5,4,1, 6,8,1, 7,2,5. KHAND. UP. 1,8,1, 3. हृत्त ते इदं प्रवक्ष्यामि KATHOP. 5,6. KAUSH. UP. 1,1. हृत्त ते कथयिष्यामि BHAG. 10,19. MBH. 13,345. R. 1,48,13. 6,3,1. ज्ञागर्तव्ये स्वपत्नीम् हृत्त ज्ञागर्तव्ये स्वयम् MBH. 1,5925. हृत्त मार्जारमेवेह श्रयामि KATHAS. 33,120. यश्च हृत्तेति नेति च so v. a. *da hast du, nimm hin* AV. 11,8,22. हृत्ता-नुपानम् KHAND. UP. 1,10,3. गा मे देहि भोः । हृत्त ते ददामी ३ P. 8,2,99, Schol. हृत्त ते धानकाः । हृत्त ते गुडकाः । हृत्त ते गुडकाः 5,3,77, Schol. ददामि ते हृत्त व-रम् MBH. 4,307. प्रणु हृत्त 3,11943. श्रूयतां हृत्त R. 4,61,32. हृत्त लक्ष्मण पश्येत् सुमित्रा सुप्रज्ञास्त्वया R. SCHL. 2,97,8. हृत्त प्रसीदानय तम् KATHAS. 24,143. हृत्तायं विहितस्तस्य वधोपायो डुरात्मनः so v. a. *sieh da!* R. 1, 14, 20 (21 GORR.). हृत्तानार्ये ममामित्रे सकामा भव R. GORR. 2,10,5 = 34,2. हृत्तेदानीं सकामास्तु कैकेयी 3,55,41. हृत्त सिद्धो ऽयमर्थः MAKĪH. 47,6. हृत्त संरक्षितो ऽप्यहम् 103,13. हृत्त न गतः 114,15. MRGH. 102. ÇĀK. 27,9. 46,8. 58,4. 104,17. VIKR. 10,9. हृत्त हृत्त व्यवसितस्य मे सं-वर्धनं संवृत्तम् 57,2. 11. 69,10. Spr. (II) 2425. 2955. 5777. 7022. स्मरामि हृत्त स्मरामि UTTARAR. 10,2 (13,17). 30,15 (39,15). 105,4. KATHAS. 5,90. 135. 18,331. 63,117. PRAB. 7,7. 29,15. हा हृत्त Z. d. d. m. G. 27,13. हृत्त तर्हि UTTARAR. 28,3 (37,5). SARVADARÇANAS. 27,11. 47,19. तां का-शीं परिकृत्य हृत्त विबुधैरन्यत्र किं स्थीयते Spr. (II) 1253. श्लेष्माणं च निकृत्ति हृत्त 1992. काचमूलेन विक्रीतो हृत्त चित्तमपिर्मया 2337. 2553. 3701. 4680. 5919. 7017. MĀLATIM. 24,6. KATHAS. 3,119. 15,131. 32,48. 48,131. RĀGA-TAR. 3,162. SĀH. D. 48,8. 60,16. 63,13. BHĀG. P. 1,6,22. 3,15,23. 4,4,28. 7,9,41. 8,22,27. 10,35,11. Nach den Lexicographen: हृष्ये, संप्रहृष्ये, प्रमोदे (so st. प्रमोदे zu lesen H. an.) AK. 3,4,22 (28), 6. H. an. 7,26. MED. avj. 28. HALĀJ. 5,89. वाक्कारम्भे AK. H. an. MRD. स्र-नुकम्पायाम् AK. H. an. विषादे AK. H. an. MED. खेदे MED. शोचने HA-ĪĀJ. दाने und निश्चये H. an. सध्रमे MED. und ÇABDAR. im ÇKDR. वादे ÇABDAR. ebend. स्रक्तकल्पने AĠAJAP. ebend.

हृत्तकारं m. der Ausruf हृत्तः निवीती हृत्तकारेण मनुष्यास्तर्पयेद्य LAGHU-VISHNU im ÇKDR. BĀLAR. 42,12. unter den 4 Zitzen der Kuh वाच् ÇAT. BR. 14,8,9,1. PĀR. GRHJ. 1,19. MĀRK. P. 29,9,11. gedeutet als 16 Mundvoll Almosen 36; vgl. Schol. zu H. 813 und KŪRMA-P. im ÇKDR.

हृत्तार (von 1. हृन्) nom. sg. der Einen schlägt: प्रतिकृत्तुं न चेच्छति हृत्तारम् MBH. 12,8437. Spr. (II) 5611. 5623. Verz. d. Oxf. H. 51, b, 34. der Jmd erschlägt, tötet, vernichtet, Mörder: हृत्ता चेन्मन्यते हृत्तुम् KATHOP. 2,19. BHAG. 2,19. M. 8,351. JĀGĪ. 2,276. य एव देवा हृत्तार-स्तांल्लोको ऽर्चयते भृशम् MBH. 12,439. R. 7,8,4. RĀGA-TAR. 4,98. स्र° BHĀG. P. 4,11,18. das obj. im gen.: दस्वैः RV. 2,12,10. 8,87,6. 9,88,4. AV. 1,7,1. 3,10,12. रत्तसः 4,19,3. स्रृतीपितः VS. 12,5. ÇAT. BR. 3,3, 4,3. MBH. 4,2293. R. 3,36,12. KUMĀRAS. 2,20. VARĀH. BRH. S. 69, 28. PAKĪAR. 1,10,76. सैन्यस्य R. 3,40,16. 5,12,34. सुराणाम् Bez. eines best. Agni MBH. 3,14168. parox. mit acc.: वृत्रम् RV. 4,17,8. 21,10. AV. 5,18,14 ist wohl हृत्ताभिर्शस्त्रिमिन्द्रः zu lesen. सुरारिन् R. 7,8,25. 86, 16. in comp. mit dem obj.: मृग° M. 5,34. शरणागत°, स्त्री° 11,190. MBH. 12,1402. R. 1,46,2. 5. 4,1,27. प्रतिसूर्याणां माला नृपहृत्ती VARĀH. BRH. S. 37,2. रत्नः प्रधाननृपहृत् 38,5. 104,5. KATHAS. 21,30. RĀGA-TAR. 3,64. BHĀG. P. 6,18,23. 7,5,35. Etwas zu Grunde richtend, zerstörend, zu Nichte machend, vertreibend: दत्तपञ्चस्य MAKĪH. 173,14. इष्टापूर्तापुषां

हृत्ती परदारगतिर्नाम MĀRK. P. 34,62. कफस्य SUÇR. 1,198,14. 199,4. 219,8. मुक्ताफालानि हृक्कौकहृत्तृणि VARĀH. BRH. S. 81,30. = चार UĠĒVAL. zu URĀDIS. 2,95. — Vgl. स्रश्च°, कार्य°, कुष्ठ°, क्रोध°, वृत्तु°, स्वर°, धर्म°, नाग°, पाक°, फणि°, भूत°, मधु°, मल°, विघ्न°, विश्वास°, विष°, वृत्ति°, शत्रु°, प्रूल°, सस्य°, सैन्य°.

हृत्तव्य (wie eben) adj. zu tödten, mit dem Tode zu bestrafen, aus dem Wege zu räumen M. 8,193. MBH. 3,2091. R. GORR. 1,22,17. 3,13,23. 4,34,26. 37,13. KĀM. NITIS. 17,14. ÇĀK. 6,12. Spr. (II) 2399. 4850. 4930, v. l. 7365. KATHAS. 25,108. MĀRK. P. 19,22. PAKĪAT. 48,2. ed. ord. 57,23. HR. 18,18. ed. JOHNS. 1947. BHĀG. P. 1,7,53. 7,5,38. यो ऽनुमोदति हृत्तव्यम् (हृत्तव्यम् ed. Bomb.) wer zustimmt, dass getötet wird, MBH. 13,5634. zu verletzen: धर्म Spr. (II) 3089. RĀGA-TAR. 4,384 wohl fehlerhaft für हातव्य; vgl. Spr. (II) 1856.

हृत्तु (wie eben) m. Tötung, Vernichtung: राजन्यहृत्तवे BHĀG. P. 11. 5,50. Tod und Stier WILSON nach ÇABDĀRTHAK. हृत्तवे infin. s. u. 1. हृन्- — Vgl. सु°.

हृत्तव (von हृत्तार) n. die Rolle des Töters, Vernichters MUIR, ST. 4,392.

हृत्तीमुख m. Bez. eines best. die Kinder verfolgenden Dämons PĀR. GRHJ. 1,16.

हृत्त (von 1. हृन्) adj. zu schlagen, niederzumachen: रिपु RV. 3,30,15.

हृत्तमन् (wie eben) n. Schlag, Stoss, treffender Wurf RV. 1,33,11. त-पिष्टेन हृत्तमना हृत्तना तम् 7,59,8. 94,12. 10,48,6. 113,8. — Vgl. स्र-श्म°, पुहृ°.

हृत्तमान 1) adj. s. u. 1. हृन्. — 2) m. pl. N. pr. eines Volkes MBH. 6,377 nach der Lesart der ed. Bomb., हृत्तमार्ग ed. Calc.

हृत्तुषा (auch हृत्तुषा) f. eine best. Pflanze, in zwei Arten: vulgo शेरे-णी (Adelia nereifolia nach MOLESW.), हृत्तुक्वेर (BHĀVAPR. 5) oder कुंसि (AUSH. 102). Sie riecht nach Fisch, die Frucht der einen gleicht der des AÇVATTHA. RĀGAN. 4,115. MAD. 2,45. KĀRAKA 8,12 (v. l. हृत्तुषा). SUÇR. 2,44,12. 506,7 (हृत्तुषा). 530,10. ÇĀRĀG. SĀH. 2,6,33. 36. Vgl. unter कफघ्नी, घाङ्गनाशिनी, विगन्धिका, विल्ला und विल्लगन्धा.

हृत्तोर N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 338, b, 32. 339. b, 3 v. u.

हृम् interj. रोषभाषणो und स्रनुशये H. an. 7,18. रोषोक्तौ und स्रनुशये MED. avj. 55.

हृमीश्राण N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 340, a, 14.

हृमीरपुर्य adj. etwa aus Hamirapura stammend Verz. d. Oxf. H. 1, a, 13 v. u. = Verz. d. B. H. 104.

हृम्ब m. N. pr. eines Mannes RĀGA-TAR. 8,684.

हृम्बा s. हृम्भा.

हृम्भा (onomatop.) f. das Gebrüll der Kühe (Kälber) TRIK. 2,9,21. H. 1406. °रव MBH. 1,6680. HARIV. 3312 (हृम्बा° die ältere Ausg.). 3518. 3870. R. 1,54,18. 55,2 (55,7. 18 GORR.). RĀGA-TAR. 7,1427 (हृम्बा°).

हृम्भाय (von हृम्भा), °यते brüllen (von der Kuh): °यमाना MBH. 1,6670. हृम्, हृम्भति (गति) NAIGH. 2,14. DHĀTOP. 13,24. हृम्भति: सुराष्ट्रेषु PAT. bei MUIR, ST. 2,370.

हृम्मीर m. N. pr. eines Fürsten von ÇĀKĀMBHARI, der im 14ten